

हिरण्यगर्भा



● मनोज कुमार श्रीवास्तव

हिरण्यगर्भा

● मनोज कुमार श्रीवास्तव

हिरण्यगर्भा

प्रकाशक

पहले
प्रकाशन

25-ए, प्रेस कॉम्प्लेक्स,

एम.पी.नगर., भोपाल

प्रथम संस्करण - 2011

कवि ©

आकल्पन : आशा रोमन

मूल्य : 100/-

मुद्रक : प्रियंका ऑफसेट, भोपाल

समर्पण

मनोहर-शिल्पी

अजय-मंजु

मनोज-हनी

शैलेन्द्र-कल्पना

अनुराग-नमिता

और मेरी बेटी

वदान्या

को

प्रायः मैं भूमिका लिखने से बचना चाहता हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि वह जितनी लम्बी होती है, उतनी देर तक पाठक को 'डिटेन' किए रहती है, और यह बेकार की एक बाधा है रचना और सहृदय के बीच। लेकिन मैंने देखा कि तुलसीदास ने बालकांड का एक बड़ा हिस्सा भूमिका की तरह लिखा और यही नहीं, उन्होंने 'एक्नालिजमेण्ट' भी किए। बहरहाल यह भूमिका बस इसलिए क्योंकि भूण हत्या पर ये कविताएं कहीं-कहीं कुछ अपरिचित-सी अवधारणाओं का इस्तेमाल करती हैं। मसलन 'नंगी शाखें' (बेअर ब्रांचेस) शब्द, जो चीन में ऐसे अविवाहित युवकों के लिए प्रयुक्त होते हैं, जो लिंगानुपात बिगड़ने-से अब परेशानहाल हैं, उनकी माएं अब पूछती हैं कि 'वो परी कहां से लाऊं/तेरी दुल्हन किसे बनाऊं।' और चीनी युवक के लिए बात का जवाब यह कहकर देना नामुमकिन हो गया है कि 'छोरी कोई पसंद न आए मुझको।' सन् 2020 तक चीन में दो करोड़ 40 लाख वधुओं की शार्टेज होगी। इसका अर्थ है कि इतने युवकों के द्वारा कभी कोई घर-परिवार स्थापित नहीं किया जा सकेगा। न पत्नी होगी, न बच्चे होंगे। इसलिए 'नंगी शाखों' की संज्ञा उन्हें देकर चीन के लोक मानस ने एक बहुत ही मार्मिक रूपक - 'गुआंग गुन'- गढ़ा है। वेलेरी एम. हडसन ने तो राज्य की युद्धातुरता के पीछे भी इन्हीं नंगी शाखों का तर्क रखा है : Conflict is often an effective mechanism by which governments can send bare branches away from national population centers possibly never to return.

स्त्रीवादी आन्दोलन और चीन-भक्त लॉबी मानवाधिकारों के इस निर्मम महानाश पर चुप है। इसका अर्थ यह नहीं कि भारत में कोई बेहतर स्थिति है। पुत्र-वरीयता की अपसांस्कृतिक मानसिकता ने भारत में भी पंजाब, हरियाणा, दिल्ली में, भिंड-मुरैना-शिवपुरी-दतिया-ग्वालियर में अपनी तरह के चीत्कार रचे हैं। धीरे-धीरे हमारे देश और प्रदेश के कुछ हिस्सों में भी नंगी शाखों का एक अधोवर्ग (Subclass) युवाओं के बीच पनपता जाएगा। परिवार के वंश-वृक्ष की ऐसी शाखें जिन पर कभी फल नहीं आएंगे, क्योंकि उन लड़कियों, जो उनकी पत्नी हो सकती थीं, का निर्वर्तन पहले ही हो चुका है।

इन चौसठ कविताओं में चौसठ योगिनियों या चौसठ कलाओं का संदर्भ-संकेत ढूंढ़ने की कोशिश की जा सकती है, किन्तु मेरी नजर में चौसठ का यह आंकड़ा विभिन्न तरह की चालों-कुचालों से प्रभावित हो चुके उस स्त्री जीवन का प्रतिनिधि है जो अब एक शतरंज बनकर रह गया है।

प्राविधिकी परिवर्तन के साथ यदि मानस-परिवर्तन न हो तो क्या कहर ढाया जा सकता है, इसका आदर्श उदाहरण भ्रूण-हत्या का यह मुद्दा है। विलियम बेंटिक के समय की शिशु-हत्या प्राविधिकी के साथ भ्रूण-हत्या में बदल गई है, लेकिन खत्म नहीं हुई। बेंटिक की कोशिश विधिक समाधेयता (लीगल साल्युबिलिटी) की थी। उसकी अपनी सीमाएं थीं। अब विधि से प्राविधिकी तक की यात्रा हो गई है। इस यात्रा के साथ-साथ उपभोक्तावाद का मानस भी चला आया कि जब मैं किसी चीज का आर्डर प्लेस कर उसे पा सकता हूँ तो लो, मैं लड़के का 'ऑर्डर' भी प्लेस किए देता हूँ। यह वह मानस नहीं है, जहाँ देव भी संकट आने पर देवी से दया-याचना करते थे। यह मानस नियंत्रण या चार्ज में होने का है, जहाँ हर चीज याचना नहीं क्रयादेश की मेरी ताकत पर निर्भर है। विधि की सीमाएं हैं, लेकिन हमारे देश में प्राविधिकी को पहले आने और पर्याप्त नुकसान कर लेने दिया जाता है, फिर कानून बनाये जाते हैं। अरब देशों ने 3G के आने के पहले उसके संभावित दुरुपयोगों को रोकने के लिए कानून बनाया, फिर उसकी अनुमति दी। किन्तु प्राविधिकी और विधि के बीच हमारे यहाँ 'तू डाल-डाल मैं पात-पात' का रिश्ता चलता है। जब तक विधि आती है, तब तक प्राविधिकी और अधिक कूट (clandestine) और चतुर हो जाती है। निरक्षर और अनाधुनिक समाज में अनुज्ञा चलती थी और बेटे की चाहत में बेटा की कतार लग जाती थी, अर्वाचीन और सुशिक्षित सभ्यता में वर्जना चलती है, जहाँ बेटे की चाहत में बेटा का निषेध ही कर दिया जाता है। यह चुनाव मृत्यु का चुनाव है, वह चुनाव जीवन का चुनाव था।

एक अर्थशास्त्रीय युग में लड़की होने की लागत- दहेज, शादी के कार्यक्रम के खर्च आदि अनुषंगों को मिलाकर निकाली जाती है और यह युग संरचनात्मक रूप से उस बेहतर भावनात्मक संतुष्टि का सही-सही आंकलन करने में अक्षम है, जो बेटा के पालन-पोषण में मां-बाप को होता है। उनकी तुलना में अपनी मेहनत के आदिम अंधेरे में रह रहे आदिवासी बेहतर हैं, जो

लड़की के होने को प्राफिट एंड लॉस अकाउंट के जरिये नहीं नापते। कभी रूसो ने शिक्षा, विज्ञान और सभ्यता के विरुद्ध अपना क्रान्तिकारी निबन्ध लिखा था। यदि आज वे भारत में होते तो इस कन्या भ्रूण हत्या के मुकाम पर वे और भी धारदार होकर लिख सकते थे। यदि संख्या महत्वपूर्ण न हो और सिर्फ खतरे की बात हो तो कन्या भ्रूण को हम आपद्गस्त प्रजाति (endangered species) की श्रेणी में डाल सकते हैं। आयोजना का युग है। हम बजट प्लानिंग और फैमिली प्लानिंग करते-करते अब सेक्स प्लानिंग भी करते चल रहे हैं। कुछ भी ईश्वर के हाथों नहीं छोड़ना चाहते। यों देखो, तो धर्मस्थलों के अंदर बला की भीड़ है। सब कुछ उस पर छोड़ने की गुजारिश करती।

ये कविताएं स्त्री के निर्वाचन (Women's choice) पर एकाग्र होते हुए 'मां' को सम्बोधित नहीं कर रही हैं, बल्कि समलिंगी माँ से बेटी के सम्प्रेषण का ज्यादा सहज और सुलभ रिश्ता होने के कारण बार-बार माँ को सम्बोध्य हैं। मां को हम किसी सामाजिक निर्वात में नहीं रखे हुए हैं, लेकिन अजन्मी बेटी अपने दर्द का पहला रेफरल मां को ही कर रही है तो यह अस्वाभाविक भी नहीं। 'मां' सामाजिक दबावों के बीच में से गुजरते हुए कई बार स्वयं को आत्म-निर्णय के अधिकार से वंचित भी पाती है। लेकिन इस सहानुभूति के आधार को दायित्व-मुक्ति का आधार नहीं बनाया जा सकता। मां आशा के एक बड़े केन्द्र के रूप में कई सर्वेक्षणों में सामने आई है। उच्च शिक्षित और मीडिया से exposed मां अपने कन्या भ्रूण को, विपरीत सामाजिक दबावों के सामने, सुरक्षित रखने में ज्यादा सफल हो पाई है।

इस पुस्तक में भ्रूण हत्या पर 48 कविताएं होने के साथ कविताओं के दो और वर्ग हैं। एक नौ कविताओं का वर्ग है जिसमें एक साल की बच्ची एक अंगुली से इशारे करती है जब माँ की गोद में चढ़े-चढ़े वह कमरे के बल्बों को देखती है। एक साल की यही बच्ची मोबाइल से खेलते हुए अगली सात कविताओं के वर्ग में भी है। भ्रूण हत्या से बचा जीवन प्रतिपल काव्यात्मक है।

इसके पहले कि यह भूमिका भ्रूण-हत्या की रूखी-सूखी विवेचना में तब्दील हो जाए, मैं यह कहकर आपको अन्दर के पृष्ठों में लिए चलता हूँ : जैसा बीज बोओगे, वैसा काटोगे/जो बीज मारोगे, उसी से हारोगे।

(मनोज कुमार श्रीवास्तव)

(1)

सहस्राब्दियों पहले
कंस ने जब
मुझे
यों ही पटक कर मार डालना
चाहा

मैं उसके हाथों से छिटककर
ऊपर
आकाश में चली गई

उसे शाप देते हुये
परिणाम का

तुम
मेरे अभिभावक हो

या कहूं
कि हो सकते थे

तुम्हारे लिये
मैं शाप रोक लूंगी

किन्तु
परिणति
क्या तुम रोक सकोगे, पिता.

(2)

आपको नहीं लगता
मम्मी पापा

पर मुझे लगता है
कैसा कैसा

अपने ही
मम्मी पापा के हाथों मारा जाना

यों कहने को
मुझमें
न संज्ञान है
न अनुभूति

आप में है
आप दोनों में है

(3)

रक्तबीज को
मारने वाली
देवी

तेरे ही सामने
बिखरा पड़ा है

बीजों
का
रक्त

(4)

वो जो तुम
अक्सर कहते थे
मना करते हुये
किसी प्रेरक को नियोजन से

कि
बच्चे ईश्वर की देन होते हैं

सच बताओ
क्या वही तुम दुहरा रहे थे

मुझ नन्ही जान को
अफीम चटाते वक्त

(5)

मैं अभी
बन भी
न पायी थी

कि
मुझे दोबारा
प्रस्तुत होना पड़ा

तुम्हारे कारण
पिता

तुम्हें भी
बनाने वाले के

पास

सामने

तुम शायद कभी प्रस्तुत न होंगे

(6)

प्रगति

है

यह

पहले मरी थी मैं

शिशु बनकर

अब

बीज की ही तरह

प्रगति है यह

(7)

में

तुम्हारी आंखों के सामने
चलने की पहली कोशिश में
गिरती ही, मां
गिरती ही, पिता

उसके पहले
तुमने मुझे

गिरा दिया

(8)

तुम तो बहुत पढ़े लिखे थे
मैं भीतर से तुम्हें
अभिमन्यु की तरह सुन रही थी
सीख रही थी

लेकिन यह
चक्रव्यूह भी
तुम्हारा ही चयन था

तुम्हीं ने मेरे विरुद्ध रचा

और तुम्हों ने यह युद्ध रचा
जिसमें मुझे
साफ करते
ये मशीनी हाथ ही

महारथी थे

भूल मुझसे हुई
कि तुम अर्जुन नहीं थे

(9)

विज्ञापन ही था वह
घाना की कॉफी का
जिसमें एक दाने को कर दिया जाता है खारिज
उसे परखने के बाद
उसे 'सॉरी' कहने के बाद

मैं भी कुछ हो सकती थी
सीता, सावित्री या अम्बिका
दुर्गा या सरस्वती
लक्ष्मी या लक्ष्मीबाई

क्या तुमने मुझ दाने को खारिज करने से पहले
कुछ तो भी परखा
कि मुझमें भावना न देखी, माफ किया
संभावना देखी

और ईमानदारी से दिल में मुझे
'सॉरी' भी कहा

(10)

मां,
तुम्हें पता है
जितने लोग
डॉक्टर की
भ्रूण-हत्या क्लीनिक में गये
आधे ही वापस आए जिन्दा

यह सांख्यिकी
चौकाती है क्या ? समझ नहीं आती ?

मैं समझाती हूँ
तुम और मैं
हम दो गए
क्लीनिक में

तुम वापस आयीं
मैं नहीं

सच कहूँ, मां
तुम भी
आधी ही वापस आईं

(11)

मां,
लोग कहते हैं
मत आओ इस दुनिया में
जहां लोग मज़हब के नाम पर एक दूसरे को मारते हैं
भाषा के नाम पर मारते हैं
प्रांत के नाम पर मारते हैं
जाति के नाम पर मारते हैं

मां,
मुझे लगता है कि
उसके भी पहले

कैसे आऊं
उस दुनिया में
जहां मां
अपनी बच्ची को मारती है

(12)

मम्मी-पापा

मैं जब

बिंदु के बराबर भी

अस्तित्व में आई

तो वह

तुम्हारे प्यार के ही कारण न

प्यार ही के कारण

तुम दोनों एक हो गए थे

मुझे बताओ तब तुम

अपने प्यार के अबोध पुष्प के प्रति ही

हिंसक

कैसे हो जाते हो

मम्मी-पापा

तुम्हारा वह रसायन कैसे अस्तित्व में आया

जिससे 'लव' और 'वायलेन्स'

एक हो जाते हैं।

(13)

मुझे हँसी आती है
जब यह दुनिया
इच्छा-मृत्यु पर
डिबेट कर रही होती है

यह दुनिया
जिसने मुझे
इच्छा का
जीवन भी नहीं दिया

(14)

मां

तुम हिरण्यगर्भ हो

हर स्त्री की तरह

तुम्हारा गर्भ त्रुटि नहीं है

तुम्हारा गर्भ हीनता नहीं है

तुम्हारा गर्भ बोझ नहीं है

उनसे कहो मां

कि तुम्हारे मातृत्व का शिकार नहीं किया जा सकता

उनसे कहो मां

कि अपनी कोख को लेकर

तुम कभी क्षमाप्रार्थी न होगी

उनसे कहो मां
कि तुम्हारा शरीर एक संप्रभु देश है
और मैं
एक छोटी-सी कोशिका भी
एक संप्रभु देश की
साधिकार नागरिक

अपनी देह का संविधान तुम्हें ही तय करना है, मां
अंग्रेजी में वे देह को संविधान कहते भी हैं

(15)

डॉक्टरों की वह शपथ

और मेरा

यह पथ

ऊर्ध्वलोक का

क्या तुम्हें नहीं लगता है

कि कुछ लोगों ने

हत्या की मार्केटिंग शुरू कर दी है

वे आकर्षक पैकेजिंग में जिस तरह

मेरी मृत्यु का वादा करते हैं, तुम्हारी खुशी का भी

सावधान रहना मां

यदि ठगी गई

तो मैं रिफंड में भी नहीं मिलूंगी।

(16)

मैं एक बिन्दु थी

यह तुम्हें तय करना था

कि मैं

शून्य हूँ

बूंद हूँ

या

वृत्त हूँ

जब तुमने मुझे शून्य कर दिया,

मैं तुम्हारे कपोलों पर ढुंकी बूंद थी, मां

और वह वृत्त किसने खींचा

जिसे तुम कभी लांघकर कह न सकीं

कि झलकता है

इस बिन्दु में भी

सिन्धु का प्रतिबिम्ब।

(17)

मैं नहीं देख पाई सितारे
मैं नहीं देख पाई घास भी

मैं नहीं देख पाई आसमान और चिड़िया
मैं नहीं देख पाई पेड़ और नदी

मैं नहीं देख पाई पहाड़
मैं नहीं देख पाई गुड़े-गुड़ियां
बादल और झूले

मैं जितना कुछ भी नहीं देख पाई
उतना ईश्वर तुम्हें देख लेगा।

(18)

मां,

क्या तुम सचमुच ही इतनी असहाय हो

तुम्हे लोग कहते रहेंगे तुम गाय हो

तुम पर चलता रहेगा पति का, समाज का, सुसराल का डंडा

माफ करना मां

मुझे तुम पर शक होने लगा है

माना कि तुम संस्कृति के तर्क से स्त्री की तरह कमज़ोर थीं

लेकिन मां की तरह ताकतवर हो सकती थीं प्रकृति के अस्त्र से

कभी तुमने
आकाश से और पहाड़ों से
बिजली से और बादल से
खुली हवा से और तेज़ रफ्तार नदी से

मेरे हक में सलाह तो ली होती

ये सब अनुभवी हैं, मां

और भुक्तभोगी भी
प्रकृति के बिगड़ते संतुलन के।

(19)

जिस अपराध का दंड नहीं मिलता
उसकी सजा ज्यादा देर तक साथ साये की तरह चलती है

किसी विचित्र तरीके से
वह लौट-लौट कर
आघात करती है

तुम जब अपनी चोटों का हिसाब कर रहे होगे
मैं थी ही कौन तुम्हारे लिए जो तुम्हें याद आऊंगी

मैं तो चीख भी नहीं सकी थी
चिल्लाई भी नहीं

जमाने के रजिस्टर में मेरा नाम ही दर्ज नहीं
तो मैं शिकायत भी दर्ज क्या करवाती

तुम अदंडित रह गए हो नरभक्षी

जानती हूँ
कुछ दिन बाद देखूंगी

रह गए
क्या तुम
अखंडित भी।

(20)

मुझे तुम्हारे गर्भ के दुग्ध-सिंधु
में तैरने नहीं दिया गया

मेरे जीवन का कमल
तुम्हारी नाभि से जुड़कर नहीं खिला

कुछ मशीनों से खुरचकर
मुझे फेंक दिया गया

परियों ने मुझे सम्हाला
और ले गई क्षीरसागर में

वहां जिनकी नाभिनाल से जुड़े
कमल पर ब्रह्मा थे

उन्होंने मुझे अपनी गोद में बिठाया



लेकिन मैं तो तुम्हारी गोद में खेलना चाहती थी, मां।

(21)

कानून ने तो इसे अपराध ही बनाया
कानून जब किसी पाप को अपराध
बना देता है

तो अचानक सारी चीजें एक्सटर्नलाइज हो जाती हैं

साक्ष्य, गवाह, वकील
कोर्ट, पुलिस, पेशी

और तिकड़मों के खेल में बदल जाती है

मेरी हत्या
मैं जो इतने सरंजाम जुटाने के लिए

शेष नहीं हूँ

मेरी खुशबू तक को कुरेद-कुरेद कर गायब कर दिया है
इस आत्मविश्वास के साथ कि खुशबू कभी प्रेत नहीं बनती

कानून की किताब इसलिए
कानून की किताब रहती है
वेद नहीं बनती।

(22)

वे बड़े आध्यात्मिक हो गए हैं
और बड़े वैज्ञानिक भी

मेरा खतरा दूर कर लेने के बाद

इन दिनों वे एक चिरन्तन प्रश्न से जूझते हैं
जिन्दगी ठीक-ठीक किस बिंदु पर शुरू होती है

कभी वे राहत की सांस लेते हैं
कभी वे माथे पर चुह-चुहा आया पसीना पोंछते हैं

वे नहीं चाहते
इस अपराध बोध से ग्रस्त होना
कि उन्होंने एक जिंदगी खत्म की

मैं उन्हें बताऊं कि
बात शुरुआत और खात्मे की नहीं है

कभी न थी

बात चुनने की है

ज़िंदगी खत्म करना
या ज़िंदगी की संभावना खत्म करना

एक

ही

बात

है



जो घात है वो घात है।

(23)

कहते हैं
प्यार इसलिए अंधा होता है
क्योंकि मां अपने
गर्भस्थ शिशु को
तब से प्यार करना शुरू करती है
जब उसने उसका चेहरा भी नहीं देखा होता है

तुम्हारा चेहरा क्यों उतर गया मां

मैंने तुम्हें कुछ नहीं कहा

बस एक बात कही।

(24)

खो गई हैं लड़कियां
नौ करोड़ से ज्यादा
अफगानिस्तान, बांग्लादेश, चीन, भारत
पाकिस्तान, द. कोरिया और ताईवान भर में

खो गई हैं लड़कियां

कितना अच्छा लगता है न
एक नरसंहार को

तब्दील करना
गुमशुदा की तलाश में।

(25)

पराध्वनि का एक अध्यात्म था
एक नाद था मूलभूत
जिससे सृष्टि अस्तित्व में आई

यह कौन-सा
अनुवाद हुआ है
अल्ट्रासाउंड के रूप में

जो रोकता है अब
अस्तित्व में आने से
सृष्टि को ही।

(26)

जब एक बार तुम्हें
भविष्य का पता लग गया
तो तुमने
भविष्य बदलने की तैयारी कर ली
मुझे मारकर

उसके बाद से
महाकाल के सामने

तुम्हारी नियोग्यता सदा को सिद्ध हो गई
कभी भी
किसी भविष्य को जानने में

अब जाओ जितना हो सके
ज्योतिषियों के पास

बदलो कितनी भी अंगूठियां

तुम्हारा भविष्यांक जड़ हो गया है

(27)

मां तुमने बताया नहीं मेरे हत्यारों को
कि मेरी आस जोह रही है एक सूर्य-किरण
कि मेरी राह में नज़रें गढ़ाए बैठा है एक फूल खिलने को
कि एक ऋचा मेरे नाम से बनने को विकल है
कि एक चिड़िया मेरी प्रतीक्षा में कितनी बार
गवाक्ष में आ बैठती है
कि एक गीत मेरे लिए तुम्हारे ओठों पर वैसे ही बन रहा है जैसे
ये मोजे जो तुम बना रही हो
कि मेरे लिए घर के पड़ोस से गुजरती नदी भी ठिठककर
पूछती है कि मेरी किलकारी उसकी तरंगों में कब मिलेगी
कि मेरे नन्हें भाई की आंखें चमकती हैं उत्सुकता में

मां तुमने बताया नहीं हत्यारों को
तुम अवाक् रह गयी थीं
या मूक बना दी गयी थीं

मुझे नहीं पता
पर

इन प्रतीक्षाओं का प्रतिशोध शेष है मेरे हत्यारों पर

(28)

सुपारी लेकर
किसी की जान लेने वाले
गुंडे होते हैं
डॉक्टर नहीं होते
मैं दुहराता हूँ
डॉक्टर डॉक्टर है
कान्फ्रेक्ट किलर
कान्फ्रेक्ट किलर है
दोनों में फरक है
इतने साफ कह रहा हूँ मैं



और
आप भी यही कह रहे हैं न
डॉक्टर।

(29)

वे गिन सकते हैं
कि एक सेब में कितने बीज हैं

लेकिन उनके बस में नहीं है
यह गिनना कि
एक बीज में कितने सेब हैं

क्या इसी असमर्थता का आक्रोश
उतार रहे हैं वे
निरीह और सरल और सुकोमल

बीज पर

(30)

ओ मेरी मां के ससुर
ओ मेरी पिता के ताऊ
ओ मेरी मां की सास

तुम जो भी कोई हो
जिसके दबाव में मुझे उत्पाटित कर दिया गया

मेरी मां का अहसान मानो
कि तुम जैसे आउटलॉ को वो
अभी भी
इन-लॉ कहती है।

(31)

‘नंगी शाखें’

यह नाम है स्थानीय भाषा में

उन चीनी युवकों का

जो रह गए ठूठ के ठूठ

जिस तरह की जड़ें हैं

और जिस तरह का सिंचन है

हमारे यहां

वो बहुत अलग तो नहीं

फिर

क्यों तुम सोचते हो

कि हमारे यहां

शाखें हरी-भरी होंगी

उन पर पत्ते आयेंगे।

(32)

यह हरित क्रांति पर कोई टिप्पणी नहीं

लेकिन देखिए कि जिन राज्यों में
पहले पहले आए
हार्ड-यील्डिंग वैरायटी के बीज

उन्हीं में बिगड़ा हुआ है
खतरनाक तरह से
लिंगानुपात

मनोविज्ञान है या संयोग
मालूम नहीं

बस पता है तो
बीज की इंजीनियरिंग

और ताव देना इसी से
मूँछों पर

(33)

मेरे गर्भ में आते ही
मां तुम्हारे पूरे बदन में
उजाला फैल गया था

पिता इस बात को कहते भी थे

फिर किस चीज का पता चलते ही
मेरी दुनिया में अंधेरा कर दिया गया.

(34)

उनकी मूंछें बचीं
मैं नहीं



क्या लगता है आपको

कि बड़े हो जाने पर
जब आप प्रेम में पड़ जाते हैं

तभी होती है ऑनर-किलिंग
निर्दयी रिश्तेदारों द्वारा

यह भी देखिए मुझे
कि जब मैं बड़ी हुई नहीं
बढ़ना शुरू भर किया
एक बीज की तरह

क्योंकि मैं नहीं
मेरे माता-पिता पड़ गए थे प्रेम में

मेरी ऑनर-किलिंग हुई
उन्हीं दूरदेशी
माता-पिता और रिश्तेदारों द्वारा

और किसी को यह वैसी लगी भी नहीं

(35)

बचपन में तो हम आसानी से रट लेते थे

नर हो न निराश करो मन को

जब बड़े हुए

तो समझ आया कि

नारी की निराशा अनुज्ञेय है

(36)

बेटी

तुम्हारे सारे रिश्तों में
सबसे दैवीय है

सुनो

तुम, तुम जो उसे मार डालने पर उतारू हो

तुम्हारी पत्नी

तो जैसा कि तुम्हारे इस प्रस्तावित कृत्य से
सिद्ध हो रहा है

सिर्फ तुम्हारी कामना की पात्र थी

और

तुम्हारा बेटा

वह तो तुम्हें बस इसलिए अच्छा लगता है

क्योंकि उसके जरिए तुम्हें लगता है

कि तुम वो कर दिखाओगे जिसकी

तुम्हें हमेशा से उद्दाम तृष्णा रही, जो तुम खुद नहीं कर पाए

लेकिन जरा इस बेटी को बख्शा कर देखो

यह तुम्हें उस दुनिया का अनुभव देगी

जहां कामना और महत्वाकांक्षाएं पीछे छूट ही नहीं जातीं

बहुत तुच्छ लगने लगती हैं

जिन्दगी की बहुत-सी आपाधापी
जिन्दगी की बहुत-सी भागदौड़
के बीच

निष्काम दिव्यता का यह एक मरूद्यान
बचा के रखो

ताकि कल तुम उसे सीने से लगाकर
खुद के भी पार जा सको

तुम्हारी बिटिया तुम्हारी लोकोत्तीर्णता है।

(37)

बेटा है तो
वंश चलेगा

बेटी है तो
कंस चलेगा

मुझमें

जिस दिन से
मैंने बांटा
और भेद किया
अपने ही बीजों में

उस दिन से
जैसे अभिशापित हूँ

अब तो जीवन भर जैसे
एक भ्रंश चलेगा

मुझमें

(38)

बेटा फ़ख़्र लगता था
बेटी फ़िक्र लगती थी
जिसकी सोच में

अब बुढ़ापे में अकेला बैठा है सिर झुकाए
अपने हाथों से खो दी गयी
बेटी की खोज में

और साहिर लुधियानवी के शब्दों को तोड़कर
पूछता है. उसे नाज़ था जिस पर वो कहाँ है।

(39)

मेरी मां की सास
मेरी मां की जेठानी
मेरी मां की ननद

मैं तो तुम्हारी जेंडर-पार्टनर थी

होना तो यह था कि
हम सबका एक मिला-जुला परिसंघ होता

तुम मेरे लिए वंदनवार लगातीं
तुम मेरे लिए दीवार-लेखन करतीं
तुम सोचती कि चलो तुम्हारे गुट में एक सदस्य बढ़ रहा है
तो लगालो स्वागत के तोरण द्वार
और बुला लो कोई बढ़िया सा बैंड

यदि न लगा सको कोई नारे

लेकिन तुम्हीं शामिल हो गई मेरे खिलाफ साजिश में
शामिल क्या, तुम तो 'लीड' कर रही थीं

मेरी बात छोड़ो, मैं तो चली गई
अपनी बताओ

तुम क्यों आईने के सामने श्रृंगार करने बैठती हो
जबकि क्रायदे से देखा जाए तो तुम्हें
आईने में देखकर खुद पर थूकना अच्छा लगता है।

(40)

तुमने नाम भी अच्छे गढ़े

नरसंहार

नरभक्षी

मैं तो भरम में ही पड़ गई

कि चलो अच्छा है

नहीं होता

इस देश में

नारी-संहार

नहीं होते

इस देश में

नारी-भक्षी

(41)

जैसे यह तो बहुत सामान्य-सी बात है
कि यदि तुम्हारी मां नहीं होती तो
तुम नहीं होते

यह तो तुम अच्छी तरह से जानते हो
बहुत अच्छी तरह से जानते हो

कोई बच्चा भी जानता है

सोच लो
बेटी को विलोपित करते समय

क्या यह सचमुच सामान्य-सी बात है
क्या तुम सचमुच यह अच्छी तरह जानते हो

(42)

अच्छा इसे इस तरह सोचो
कि तुम कितने ताकतवर हो गए हो

तुम एक संभावित सीता को मार देते हो
रावण तक यह नहीं कर पाया

तुम एक संभावित सावित्री को मार देते हो
यमराज से भी जो नहीं डरती थी

सोचो कि तुम कितने शक्तिशाली हो गए हो

तो क्या हुआ
कि तुम्हारी मां भी सीता थी

तो क्या हुआ
कि तुम्हारी मां भी सावित्री थी

तुम किसी बीज का डी एन ए थोड़े पढ़ रहे थे

(43)

डॉक्टर

क्या तुम्हारे साथ यह होता है
रातों में सपनों में

कि तुम्हें कुछ सितारे दिखते हैं
या कि कुछ फूल

क्या कहा
तुमने

न सितारे,
न फूल,

सिर्फ धब्बे दिखाई देते हैं, सिर्फ धब्बे

डॉक्टर, डॉक्टर
तुम सो रहे हो
या जाग रहे हो

(44)

जिस दिन
तुम्हारे फैसले से
तुम्हारी तकनीक से
तुम्हारी विद्या से

उस बच्ची
का नामो-निशान मिटाया जा रहा था

तुम अपने अपराध में इतने व्यस्त हो गए थे
कि तुम्हें नहीं दिखा : हवा में एक चीख भर गई है
एक तुम्हारे अगले किसी जन्म का कोटर है
जिसमें बहुत सी चमगादड़ें लटक गई हैं
कुछ तुम्हारे बहुत दुलराए हुए ख्वाब हैं
जिनका स्थापा शुरू हो गया है
दिशाओं में से जैसे बारूद-सा भर गया है
तुमने ध्यान नहीं दिया उस दिन तुम घर की
देहरी पर ही लड़खड़ा गये थे

जब तुम

बहुत गोपनीयता से वह गुनाह कर रहे थे

सबकी आँखें बचाकर

इस सृष्टि की तीसरी आँख तुम्हें देख रही थी

एक काली बिल्ली तुम्हें देख रही थी

कुछ तुम्हारे पूर्वज इन वायरलेस तरंगों में तुम्हें देखते हुए

आपस में फुसफुसा रहे थे

और टाइम मशीन से तुम तक पहुंचा हुआ

तुम्हारा पड़पोता तुम पर चीख रहा था

घूरते हुये तुम्हें

तुमने नजरें चुराई थीं जब

कोई तुम पर नजर रखे हुये था

मना लो तुम इस बात पर शुक्र कि कानून ने

तुम्हें नजरअंदाज कर दिया

(45)

वो लंदन में था
और वो भी चित्रपट पर

जब उसने द्रवित होकर कहा अपनी युवा लड़की से
'जा सिमरन, जी ले अपनी जिन्दगी'

और उस लड़की ने शुक मनाया
और पंख फैलाकर उड़ चली

हमारे यहां
मुरैना में
कहीं कहीं

तब गनीमत है जब यों गर्भ में ही
कहा जाए
'जा सिमरन, जी ले अपनी जिन्दगी'

(46)

जिस दिन तुम कहोगे
कि मुझे दुनिया भर की दौलत से भी
ज्यादा प्यारी है बिटिया मेरी
कि मुझे नहीं दे सकते संसार के सारे महासागर
मिलकर भी कोई ऐसा रत्न
जिसकी प्रभा मेरी बेटी की मुस्कान से बढ़कर है

जिस दिन तुम्हें अपनी बेटी के लिए
अपनी मूर्खों को झुकाना सहर्ष मंजूर होगा
और तुम्हें बेटी की खुशी के लिए पगड़ी को
किसी के भी कदमों में धर देने में एक पल का भी
विलम्ब न लगेगा

जिस दिन तुम्हें लगेगा कि क्रिसमस हो या ईद
या दीपावली, सब कुछ मनाने का रती भर
तामझाम न होने पर भी अपने आप ही मन जाते हैं पर्व
इस बात पर कि बेटी की पैजनिया आंगन में खनक रही है

उस दिन को ध्यान से देखना
वह तुम्हारी अखंड समृद्धि का दिन है
उसके बाद तुम कभी न झुकोगे
उसके बाद तुम्हारा हर दिन त्यौहार सा होगा

उस दिन तुम बदल जाओगे
तुम्हारी बेटी भी
उससे तुम्हारे रिश्ते भी
उस दिन क्योंकि तुम महसूस करोगे

तुम्हारी बेटी ने
तुम्हें
जनम
दिया
है

(47)

उस चीनी ने मुझे बताया
कि हम चाहते थे
हमारा वंश-वृक्ष रहे

तो चुना
लड़का

अब वृक्ष तो है

बस शाखें नंगी हैं

(48)

वह मेरा पड़ोसी था

और वह उसका पारिवारिक मामला था

हालांकि मैं उससे सहमत नहीं था

लेकिन यह उसकी 'च्चाइस' थी

और मैं उसके वरण-स्वातंत्र्य का सम्मान करता था

तो मैं सोचता हूँ कि

यह पाप मेरे सिर नहीं आया

मैं तो सिर्फ साक्षी था

कर्ता नहीं था

सिर्फ साक्षी था



वैसे पुलिस पूछेगी

तो मैं साक्षी होने से भी इंकार कर दूंगा।

बच्ची और आलोक

(49)

वह जब अँधेरे कमरे में आती है
अपनी एक अंगुली से मासूम
इशारा करती है
प्रकाश के स्रोत की तरफ
निःशब्द

दुःख है कि उसके अपने ही
नहीं देख पाते
उजाला

कि आलोक शब्द नहीं
संकेत है।

(50)

वह जब भी
गोदी में चढ़कर
प्रवेश करेगी
किसी कक्ष में
तो देखेगी कि
कहाँ है उजाले की जगह
वह जगह एक से ज्यादा भी हो सकती है
और वह रोकेगी नहीं
तब तक
अपनी अँगुली के इशारे करना
जब तक रौशन नहीं हो जाती

उजाले की
सारी जगहें।

(51)

जब वह प्रकाश
की तरफ
इंगित करती है
अपनी नन्हीं नन्हीं उँगलियों से

तो और सब तो
देखते हैं
प्रकाश को

उसकी माँ देखती है
उंगलियों को

उजाले सबके लिए
एक ही जगह पर नहीं।

(52)

अभी उसके
बोलने की भाषा
इशारे में है

अभी वह
ईश्वर है
या
कवयित्री ।

(53)

अभी उस पर
ईश्वर के फिंगरप्रिंट्स हैं

और इसलिए अभी
उसकी उंगलियों में
ईश्वर
बोलता है

वह नहीं बोलती।

(54)

ठीक है कि
अभी उसे आता नहीं
इस धरती पर
चलना
दौड़ना
बोलना

लेकिन आपको भी कहाँ पता
उस दुनिया की बातें
जो उसकी
फिंगरटिप्स पर हैं।

(55)

ठीक है कि
एक उँगली से
नहीं चुने जा सकते मोती
नहीं उठाए जा सकते हैं पत्थर
नहीं बीनी जा सकती है सर की जूँ भी
नहीं धोया जा सकता है अपना चेहरा

लेकिन देखिए तो
उसके सभी काम फ़िलवक्रत
एक उँगली से सधते हैं।

(56)

अभी उसकी उँगली पर
कोई
'रिंग' नहीं है

अभी उसकी
'रिंग' में
सारा जगत् है।

(57)

उसकी एक उँगली ने
आपको आश्चर्य होता है
कितने सारे अर्थों का
भार उठाया हुआ है

आपको तब आश्चर्य नहीं हुआ
जब आप सुन रहे थे
गोवर्धन को एक उँगली पर उठाए
गिरिधर की कथा।

वह बच्ची और मोबाइल

(58)

कान के पास तक
वह भी ले जाती है
फोन
जिसे वह 'ओन' कहती है

और सुनती है
उस पार से
आने वाले शब्द

शब्द
अभी उसे उस पार से ही आते हैं।

(59)

अचानक

उसके हाथ में लिए लिए

जब बज उठता है

मोबाइल

तो चौंक पड़ती है वह

शॉक का-सा एक भाव उसके मासूम

चेहरे पर तिर आता है

एक

यह भी

सबक है

उसके अस्तित्व का

कि

ध्वनि

मंत्र नहीं

शॉक है।

(60)

उसके
जन्म लेने के पूर्व
वह जहां थी
एक विराट शान्ति थी
दूध का एक समुद्र था
जिसकी लहरें भी आवाज नहीं करती थीं

लेकिन अब वह
जिस मोबाइल को
खेल समझकर
हाथ में
ले रही है

उसके जरिए ही
हाथ से छूट जाएगी
उसकी
शान्ति की छोटी-सी दुनिया।

(61)

वह
अपने सामने पड़े
बहुत से मोबाइल में से
उठाती है तो
सिर्फ
ब्लैकबेरी

अभी पता चल जाए
कंपनी को
तो वापर लें उसे भी
विज्ञापन में।

(62)

अभी क्षण क्षण
उसका मुख
प्रति-चुम्बित होता है
मां से

और बिजली-सी
दौड़ जाती है
दोनों में

अभी यही है
उसका
विद्युत-चुम्बकीय क्षेत्र

जानकर
निराश होता है
मोबाइल।

(63)

पापा आते हैं
और समझाते हैं
कि उससे दूर रखो
मोबाइल
कि उसकी नाजुक कोशिकाओं में
हो सकता है इलेक्ट्रो-पाल्युशन

किंतु उसकी दुनिया
तो अभी है
किसी भी मानवी या अमानवी
दूषण तक से शुद्ध

जहां एक तर्क भी
कर सकता है
उसके
मन के सहज उजास को धुंधला।

(64)

वह दौड़ती है
अपनी नयी नयी
गति में

ठुमक ठुमक ढुलकती सी आती है
आप तलक

और गति का एक रोमांच
सा भरा हुआ है
उसमें

वह है
या यह है
पड़ा हुआ टेबल पर

मोबाइल।



पहले
पहिल
प्रकाशन